१ओं वाहिगुरू जी की फ़तह ।।

दसमेश जी का जलाली रूप

मूल लेखक:
सिरदार कपूर सिंघ

हिन्दी अनुवाद :
बीबी परमजीत कौर

प्रकाशक :-
धर्म प्रचार कमेटी,
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी)
श्री अमृतसर ।

नि:शुल्क

दसमेश जी का जलाली रूप

गुरू गोबिंद सिंघ जी के जीवन सिद्धांत का वर्णन करना ऐसे है जैसे कोई सूरज के सामने झाँक कर कैमरे से उस की फोटो उतारने का यत्न करे । अवश्य नतीजा इस यत्न का यह निकलेगा कि चक्षु अंधे हो जायेंगे तथा कैमरे की फिल्म खराब हो जायेगी। यदि कोई प्रत्यक्ष बिजली को हाथ से पकड़ने का यत्न करेगा, वह भस्म तो हो सकता है, पर सफल नहीं । क्यों? इस लिये पुरषोतम गुरू अवतार अपने इस जलवे जलाल के रूप में अथाह, अगोचर मन बुद्धि की पहुंच से विमुक्त, परमेश्वर सता से अभेद होते हैं तथा उन के दर्शन सिद्धांत का वर्णन असम्भव है । गुरू गोबिन्द सिंघ जी के पाँच भौतिक जलाल के सम्बन्ध में महाकवि संतोख सिंघ ने कहा है—'दुरनरिख दरशन सतिगुर को'

उन की आत्मिक और, दिव्य प्रतिभा, रूहानी जलाल तथा पारभौतिक असीमता का वर्णन व्याख्या, उन के जीवन सिद्धांतों का विश्लेषण करने के मन्तव्य से, करने का हौसला कौन करे ?

जब अर्जुन ने श्री कृष्ण भगवान के शुद्ध स्वरूप के दर्शन करने की इच्छा प्रगट की, भगवद् गीता अनुसार—

द्रष्टामिच्छामि ते रूपमेश्वरं पुरूषोतम।

(११ / ३)

श्री कृष्ण भगवान का उत्तर था —

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्व चक्षुषा।

(११ / ८)

मनुष्य ज्ञान इन्द्रियों द्वारा, मन बुद्धि की शान्ति से अमित, असीम गुरू का पारावार नहीं पा सकता, जब तक उस को दिव्य दृष्टि, ब्रहम्चक्षु प्राप्त न हो जायें । इसी लिए श्री कृष्ण

ने अर्जुन से कहा कि तेरी पुरुषोतम के दर्शन की इच्छापूर्ति के लिये मैं तुम्हें दिव्यं (नेत्र) दृष्टि प्रदान करता हूं :— दिव्य ददामि ने चक्षु —— (११.८)

इस प्रकार विचार करने से पुरुषोतम गुरू अवतार, गुरू गोबिन्द सिंघ जी का शुद्ध जीवन सिद्वांत तो यही है कि मनुष्य का परम धर्म है ज्ञान भक्ति द्वारा, आत्मा रूप परम ईश्वर की प्राप्ति, समीपता पर इस ज्ञान भक्ति की विधि क्या हो तथा इस का सामाजिक, राजकीय वातावरन क्या हो ? इन प्रश्नों का उत्तर देने का जब यत्न किया जाता है तो ये दो प्रश्न नया रूप ले लेते हैं।

(१) *सिक्ख धर्म, जिस के सम्बन्ध में गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने कहा है कि मैने इस के प्रचार तथा प्रसार के लिये जन्म लिया है –*

या ही काज धरा हम जनमं।।
समझ लेहु साधू सभ मन मं।।
धरम चलावन संत उबारन।।
दुसट सभन को मूल उपारनि।।

इस धर्म अथवा मत की रूप रेखा क्या है ?

(२) *क्या सिक्ख धर्म केवल एक निजी जीवन है, जिस का आधार आत्मिक साधन है तथा जो सामाजिक ढांचे तथा राजकीय करतबों में रुचि नहीं रखता तथा इन वादविवादों, संघर्ष, झगड़ों से निर्लिप्त रहना चाहता है या सामाजिक प्रबन्ध तथा राजनैतिक शासन इस धर्म का अभिन अंग है?*

पहले प्रश्न का उत्तर सिक्ख मत के निर्णय के रूप में ही दिया जा सकता है जो कि अपने आप में एक सर्वसम्पन्न दर्शन के तथा किसी छोटी—मोटी बातचीत या गोष्ठी का विषय नहीं बन सकता । हां, दूसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिये गुरू गोबिन्द सिंघ जी की मुखवाक रचना तथा उन के अपने जीवन पर आधारित चमत्कारी किरदारों की खोज अवश्य हो

जाती है।

गुरू गोबिन्द सिंघ जी के जीवन सिद्धांतों के इस पहलू पर मैं अब कुछ शब्द कहना चाहता हूं – श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी के श्री मुखवाक बचन कुछ तो दशम ग्रन्थ में सुरक्षित हुये हमें प्राप्त हैं तथा कुछ कथा साखियों तथा पारम्परिक इतिहास द्वारा उपलब्ध है पर इन बचनों तथा उन के जीवन करतब तथा करनी को जब तक एक साथ तथा एक संगठित रूप मान कर समझा नहीं जाता तब तक गुरू गोबिन्द सिंघ जी के सामाजिक तथा राजकीय सिद्धांतों की रूप रेखा नहीं बनती। अनेक कार्य तथा कौतक गुरू गोबिन्द सिंघ जी के मिले–जुले पड़े हैं कि अभी तक उन का एतिहासिक अंश उन का मान तथा रहस्य उन की लीला का रूप तथा संघर्ष रूप अलग नहीं किया जा सका तथा न ही पहचाना जा सका है। भाई नन्द लाल जी ने सत्य ही कहा है –

गाहि सूफी गाहि जाहद, गह कलंदर मे सवद।
रंग हाए मुखतलिफ दारद बुति अयारि मा ।३।

(ग़जल न:२)

अर्थात :– अनंत तथा मुखतलिफ जीवन किरदार गुरू गोबिन्द सिंघ जी के सौ देखे गये हैं। कभी जाहिद कभी सूफी तथा कभी कलंदर। भाई नन्द लाल जी के इस भाव का ज़िक्र भगवद गीता में भी आता है –

नान्तोऽस्ति मम दिब्यानां विशतीनाम

पर गुरू गोबिन्द सिंघ जी की जीवन लीला में सब से प्रमुख चमत्कार है खालसा पंथ की साजना । इस महान घटना से पहले तथा इस से सम्बन्धित है देवी पूजन का कौतुक।

गुरू का दर्शन :– इन दोनों घटनाओं में मेरे विचार के अनुसार गुरू गोबिन्द सिंघ जी का सामाजिक तथा राजनैतिक दर्शन सिद्धान्त छिपा हुआ है।

मारकण्डेय पुराण में कथित दुर्गा देवी द्वारा राक्षसों के नेता महंसुर को युद्ध में मार कर समाप्त कर देने का वर्णन गुरू

गोबिन्द सिंघ जी ने स्वयं अपने दरबारी कवियों द्वारा दो बोलियों में (ब्रज तथा पंजाबी) अनुवाद करवाया है।

इस प्रकार किसी अन्य शास्त्र के अनुवाद की गवाही हमें नहीं मिलती। आनंदपुर साहिब के समीप नैणे गुज्जर के टिल्ले पर केशव दास पुरोहित द्वारा, देवी प्रकट कराने के लिए यज्ञ करने के सम्बन्ध में एतिहासिक प्रोढ़ता मिलती है, केवल इस यज्ञ के मन्तवय तथा रहस्य के बारे में ही विचारों की भिन्नता है। भागवत पुराण के आधार पर ब्रज बोली में अनुवाद की गयी दुर्गा तथा असुरों की युद्ध की कथा में गुरू गोबिन्द सिंघ जी निर्णय करते हैं कि इस पौराणिक साहित्य के अनुवाद तथा प्रचार का मूल मन्तवय मानव जाति में धर्म युद्ध का उत्साह पैदा करना है। दुर्गा पूजा या पौराणिक धर्म प्रचार उदेश्य नहीं है —

दसम कथा भागौत की भाखा करी बनाए।।
अवर बासना नाहि प्रभ धरम जुद्ध के चाए।।

(दशम ग्रन्थ, पना ५७०)

भाई सुक्खा सिंघ जी दुर्गा पूजन की साखी (कथा) का विस्तार करने के बाद निर्णय करते हैं —

देवी देव कितिक जो आही।
पद पंकज गुरु मध समाही।
इह भी इक कौतक के काजा।
करति चरित्र गरीब निवाजा।

(गुरबिलास, पा० १०)

इस देवी पूजन के कौतक के पीछे दो महान रहस्यमयी तथा मौलिक विचार छिपे हुये हैं जिस का गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने खालसा साजने हेतु तथा कौम तथा जाति को आत्मिक नव जीवन देने के लिये भरपूर प्रयोग किया है। ये दो विचार हैं —

(१) जीवन संघर्ष, एक वास्तविक सत्य रूप कर्मक्षेत्र है केवल परछायी के समान असार माया—छाया का खेल नहीं जिस से ज्ञानवान् पुरुष को जल्दी से जल्दी अलग हो जाना चाहिये। जीवन नेकी तथा बदी का सार रूप तथा संग्राम है ।

ज्ञानवान् बुद्धिमान पुरुषों का यह कर्तव्य बनता है कि वे संसार का त्याग न करें बल्कि इस में गंभीर होकर पूर्ण भाग लें ताकि धाार्मिक, सुखी तथा प्रगतिशील समाज की स्थापना हो सके। इस सिद्धांत में सिक्ख जाति के बाहरमुखी तथा कर्मयोगी होने का भेद छिपा हुआ है।

(२) दूसरा विचार इस कौतक के पीछे यह है कि जीवन को उत्साहित बलवान् तथा शक्तिशाली बनाने की क्षमता केवल ज्ञानधारित बुद्धि की उपज नहीं तथा बौद्धिक विचारधारा, विज्ञान इस में इतना सहायक नहीं, जितने चिन्ह तथा अलंकार। जहां बुद्धि ज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है वहां चिन्ह संकेतों तथा अलंकारों की पहुंच हो जाती है। इस लिये चिन्ह के प्रयोग के बिना व्यक्तिगत जीवन निरोआ नहीं बनाया जा सकता। इस प्रकार दुर्गा —– संग्राम चिन्ह तथा संकेत हैं — मनुष्य की आत्मा के मूल संघर्ष का। इस चिन्ह के शुद्ध प्रयोग के बिना नव जीवन का उत्थान तथा उस की दृढ़ता सम्भव नहीं। इसी नुकते की और वेद में संकेत है — परोक्षकमाह देवा : देवलोक तथा दिव्य शक्तियों के साथ सम्पर्क बौधिक सम्बन्धों द्वारा सम्भव नहीं, चिन्ह तथा संकेतों द्वारा ही सम्भव है। यह कुन्जी है, खालसे के चिन्हों, ककारों तथा रहत के रहस्यों की।

सिक्ख संगत — इस की महान घटना गुरू गोबिन्द सिंघ जी के जीवन की है, खालसे की साजना। आम विश्वास है कि संगत को नया रूप दे कर खालसा बनाया — संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला। पर खालसा तथा सिक्ख संगत, एक ही अर्थ वाले दो शब्द नहीं है। संगत तो सिक्खों की है। उन धर्म—अभिलाषायों का समाज, जो गुरू के उपदेशों को स्वीकार करते तथा अपनाते हैं तथा इस प्रकार उन का रिश्ता गुरू के साथ श्रद्धा तथा निश्चय का है :—

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए,
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै।।

तथा

मनु बेचै सतिगुर कै पासि।।
तिसु सेवक के कारज रासि।।

पर "खालसा" का पद्द तथा पदवी "सिक्खों" की पदवी से भिन्न तथा उच्चतर है –

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हउ करों निवास।
मैं खालसे का खालसा मेरो।
ओतपोत सागर बूंदेरो।

(सर्व लोह)

सिक्ख, जिज्ञासु धर्म पंथ का राही है तथा खालसा सामाजिक तथा राजनैतिक प्रबन्ध को करने वाला तथा उस प्रबन्ध, शासन की रक्षा करने वाला है जिस सामाजिक तथा राजकीय नियम में शुद्ध तथा सनातन धर्म प्रचारित किया जा सकता है।

समाजवादी पंथ—इस प्रकार का इस आशय पर आधारित इस की नींव पर बना हुआ संघ, सोसाइटी, मानवीय तवारीख में, गुरू गोबिन्द सिंघ जी के खालसा साजने से पहले, कभी निर्मित या स्थापित नहीं किया गया था। लैनिन ने जब संन् १९१७ में खालसे की साजना से २१८ साल बाद अपनी कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना की, जिस को सारे संसार तथा मानव जाति में सोसलिस्ट आधार पर विद्रोह क्रान्ति के प्रोग्राम—का ज़िम्मेदार बनाया गया, उस ने बड़े गौरव से दावा किया कि ऐसा संघ, संसार की तवारीख में पहली बार बनाया गया है। पर यह दावा अज्ञान पर आधारित था तथा संन् १९५२ में जगत प्रसिद्ध इतिहासकार आरनोलड टाइनबी ने अपने महाग्रन्थ *हिस्टरी आफ दा वरलड* में निर्णय किया कि लैनिन की कम्यूनिसट पार्टी का पूर्वज, गुरू गोबिन्द सिंघ का खालसा है तथा यह पार्टी स्वयं भी उत्पति की अधिकारी नहीं।

गुरू गोबिन्द सिंघ जी का सिद्धांत यह है कि प्रकृतिक प्रगति पर तो मनुष्य का वश नहीं पर अध्यिात्मिक प्रगति मनुष्य के आधीन है। खालसा पंथ की साजना का मूल तथा असली

कारण यह सिद्धांत ही है तथा खालसे का प्रोग्राम तथा आशय उदेश्य यह है कि किसी हालत में भी, किसी काल या नीति से प्रभावित होकर पराधीनता स्वीकार न करें जैसा कि रत्न सिंघ भंगू ने प्राचीन पंथ प्रकाश में कहा है —

किसहूं की इह काण न कर हैं।
राज करै इके लर मर हैं।

यह प्रभुसत्ता प्राप्त खालसा स्वराज स्थापित करे जिस में शुभवृतियों तथा निर्मल किरदार वाले लोगों की रक्षा हो तथा दुर्जनों का उद्धार होता रहे :— यही भाव गुरू गोबिन्द सिंघ जी के वचनों का है —

याही काज धरा हम जनमं।।
समझ लेहु साधू सभ मन मं।।
धरम चलावन संत उबारन।।
दुसट सभन को मूल उपारनि।।

ऐसा सुखदायक तथा शुभ राज्य शासन जब स्थापित हो जाये, तो वह अपने आप ही बाकी कौम तथा समाज के लिये प्रेरक नमूना बन जायेगा। भाई सुक्खा सिंघ के गुर बिलास में अंकित है —

इह खाड़गकेत बुरका सुजान।
जो दयो चहित किरपा निधान।
इह आदि अंत एको सु पंथ।
रच दीउ जगत को दैन संथ।

बस यही रहस्य इस दोहे का समझना चाहिये जो सिक्ख संगत सवेरे—सायं सदियों से संसार भर में जो ज़ोर से पढ़ती है —

राज करेगा खालसा आकी रहे न कोइ।
खव्ार होए सभ मिलैंगे बचे शरण जो होइ।

श्रीमद्भगवद् गीता के अन्त में सारमूल श्लोक हैं—

यत्र योगेश्वर कृष्णो: यत्र पार्थो धर्नुधर:।।
तत्रे श्री विंजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
(१८.७८)

भाव यह है कि जहां भगवान कृष्ण तथा धनुरधारी अर्जुन है वहीं, श्री, विजय, विभूति और कल्याण है। अफलातून ने भी अपने जगत् प्रसिद्ध ग्रन्थो "दा रिपब्लिक" के अन्त में यही निश्चय किया था कि जब तक ज्ञान तथा शान्ति का सहयोग या सम्मेलन नहीं होता, शुद्ध तथा सुखी राजशासन नहीं हो सकता ।

गुरू गोबिन्द सिंघ जी द्वारा खालसे की सृजना का रहस्य यही है कि किसी व्यक्ति भी नहीं बल्कि एक विशोष संघ में योग तथा धनुषज्ञान, आध्यिात्मिक ओज तथा सम्पन्न राजकीय प्रभुसत्ता के इक्टठे होने के कारण उस के अखण्ड प्रवाह को पीढ़ी दर पीढ़ी, युगों युगों तक जारी रखा जाये। इस लोक तथा परलोक के कल्यान का यही रास्ता है। यही सूत्र रूप में गुरू गोबिन्द सिंघ जी के जीवन सिद्धांत का सारांश है।

प्रथम रहत यह जान,
खंडे की पाहुल छके।

होइ सिक्ख सिर टोपी धरै।
सात जनम कुशटी होए मरै।

टोपी नहीं, दस्तार सजाओ !

न डरों अरि सो जब जाइ लरों,
निसचै कर अपनी जीत करों।।

पूरन जोत जगै घट मै
तब खालस ताहि नखालस जानै।।

अमृत छको !
रहित-बहित दे
धारणी बनो !
पूरन प्रेम प्रतीत सजै
ब्रत गोर मड़ी मट भूल न मानै ।।
जब आव की अउध निदान बनैं
अतही रन मै तब जूझ मरों ।।
खालसा अकाल पुरख की फौज ।
प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज ।